नवभारत
संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

भारत-ब्रिटेन संबंधों में साझेदारी का नया अध्याय

ब्रिटेन के प्रधानमंत्री किर स्टार्मर की भारत यात्रा न केवल एक औपचारिक राजनयिक कार्यक्रम थी, बल्कि दो प्राचीन लोकतंत्रों के बीच उभरती हुई नई साझेदारी का संकेत भी थी. यह यात्रा, जो उनके प्रधानमंत्री बनने के बाद पहली आधिकारिक भारत यात्रा थी, भारत-ब्रिटेन संबंधों में एक रणनीतिक पुनर्परिभाषा की दिशा में महत्वपूर्ण कदम साबित हो रही है.

मुंबई में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और किर स्टार्मर के बीच हुई मुलाकात का केंद्रबिंदु रहा- व्यापक रणनीतिक साझेदारी को अगले दशक के लिए नई दिशा देना. दोनों नेताओं ने व्यापार, निवेश, प्रौद्योगिकी, रक्षा, जलवायु और शिक्षा जैसे क्षेत्रों में सहयोग को बढ़ाने पर सहमति जताई. खास बात यह रही कि यह बातचीत केवल कूटनीतिक शिष्टाचार तक सीमित नहीं रही, बल्कि ठोस नीतिगत पहलुओं पर केंद्रित रही.जुलाई 2025 में हुए भारत-ब्रिटेन मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) ने जिस आर्थिक साझेदारी की बुनियाद रखी थी, इस यात्रा ने उसे आगे बढ़ाने का अवसर दिया. अब लक्ष्य है— 2030 तक द्विपक्षीय व्यापार को दोगुना करना और 90 प्रतिशत से अधिक वस्तुओं पर टैरिफ समाप्त करना. यह कदम दोनों देशों की आर्थिक परस्पर निर्भरता को नई गति देगा. स्टार्मर के साथ आए बड़े व्यापारिक प्रतिनिधिमंडल ने इस विश्वास को और मज़बूत किया कि ब्रिटेन भारत को केवल एक बड़ा बाजार नहीं, बल्कि वैश्विक सप्लाई चेन का निर्णायक साझेदार मानने लगा है.प्रधानमंत्री मोदी और स्टार्मर ने 'विजन 2035' रोडमैप की प्रगति की भी समीक्षा की. यह विजन भारत-ब्रिटेन संबंधों को केवल द्विपक्षीय सीमाओं से निकालकर वैश्विक मंच पर सह-नेतृत्व की भूमिका देने वाला ढांचा है. इस दौरान प्रधानमंत्री मोदी का यह बयान उल्लेखनीय रहा कि भारत और ब्रिटेन 'स्वाभाविक साझेदार' हैं- साझा लोकतांत्रिक मूल्यों, कानून के शासन और मानवाधिकारों के प्रति प्रतिबद्धता से बंधे हुए.

इस यात्रा की एक और ऐतिहासिक उपलब्धि रही — ब्रिटेन के 9 विश्वविद्यालयों का भारत में कैंपस खोलने की घोषणा. यह निर्णय न केवल शिक्षा क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय सहयोग का नया अध्याय खोलेगा, बल्कि भारत के युवा जनसंख्या को विश्वस्तरीय शिक्षा तक सीधी पहुँच दिलाएगा. यह कदम भारत को 'ग्लोबल नॉलेज हब' के रूप में स्थापित करने की दिशा में निर्णायक साबित हो सकता है.मुंबई में आयोजित ग्लोबल फिनटेक फेस्ट में दोनों प्रधानमंत्रियों की संयुक्त उपस्थिति ने यह स्पष्ट किया कि भविष्य का संबंध केवल व्यापारिक नहीं, बल्कि डिजिटल और तकनीकी साझेदारी पर आधारित होगा. ब्रिटेन के वित्तीय नवाचार और भारत के डिजिटल बुनियादी ढांचे का संगम, वैश्विक फिनटेक नेतृत्व की दिशा में दोनों देशों को एक साथ खड़ा कर सकता है.सांस्कृतिक और जनसंपर्क के स्तर पर भी स्टार्मर की यात्रा जीवंत रही- यशराज स्टूडियो के दौरे से लेकर मुंबई में युवाओं के साथ फुटबॉल कार्यक्रम तक. इससे यह संदेश गया कि ब्रिटेन भारत को केवल कूटनीतिक साझेदार नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक और सांस्कृतिक सहयोगी के रूप में देख रहा है.

आज जब वैश्विक भू-राजनीति में नए गठजोड़ बन रहे हैं, भारत और ब्रिटेन के बीच यह साझेदारी केवल द्विपक्षीय नहीं, बल्कि वैश्विक स्थिरता और आर्थिक प्रगति की गारंटी बन सकती है. किर स्टार्मर की यह यात्रा इस दिशा में एक मील का पत्थर है — जिसने यह संकेत दिया है कि 21वीं सदी की दुनिया में लंदन और नई दिल्ली अब केवल 'साझेदार' नहीं, बल्कि 'सह-नेता' बनकर उभर रहे हैं.

रानी दुर्गावती

सदियों से जलती आ रही है नारी शक्ति

सावित्री ठाकुर
महिला एवं बाल विकास राज्य मंत्री

> **विकसित भारत के लिए नया दृष्टिकोण**- जैसे-जैसे देश विकसित भारत बनने की दिशा में अग्रसर है, उसे विकास को महिलाओं की भागीदारी के पैमाने और समानता के दृष्टिकोण से देखने की आवश्यकता है. महिला-केंद्रित विकसित भारत में महिलाओं की पूर्ण भागीदारी को विकास के लिए एक अतिरिक्त साधन नहीं, बल्कि विकास का मुख्य सूचक माना जाएगा. व्यावहारिक रूप से इसका अर्थ है कि देश की प्रगति को केवल प्रमुख कल्याण संकेतकों से नहीं, बल्कि विभिन्न क्षेत्रों - बोर्ड, लोक सेवा और सामुदायिक संस्थानों में महिलाओं के नेतृत्व और सक्रिय भागीदारी से भी मापा जाएगा.

भारत के मंत्रालयों, नीतियों और प्रमुख कार्यक्रमों की कल्पना से भी सदियों पहले, गोंड साम्राज्य की एक आदिवासी युवा रानी अग्रिम मोर्चे पर खड़ी रही — जिसने आत्मसमर्पण के बजाय सम्मान, साहस और कर्तव्य का मार्ग चुना. भारत में वीरता और पराक्रम की प्रतीक के रूप में याद की जाने वाली रानी दुर्गावती आज भी सार्वजनिक जीवन, व्यवसाय, विज्ञान और नागरिक सेवाओं को नई दिशा देने वाली महिलाओं को प्रेरित कर रही हैं. उनकी 501वीं जयंती के अवसर पर, हम उस गाथा और उन मूल्यों को याद करते हैं, जो 16वीं शताब्दी के युद्धक्षेत्रों से लेकर आधुनिक भारत की नीतियों तक एक सतत प्रेरणास्रोत बने हुए हैं.

साहस की प्रतिमा- रानी दुर्गावती का जीवन एक किंवदंती इसलिए बना, क्योंकि उन्होंने इतिहास में निष्क्रिय पात्र बनकर रहने से इनकार कर दिया. आक्रमणकारी मुगल शक्तियों का सामना करते हुए उन्होंने अपने राज्य और प्रजा की रक्षा का दायित्व अपने कंधों पर लिया. एक ऐसी महिला, जिसने नेतृत्व किया, निर्णय लिए और अंततः बलिदान दिया — रानी दुर्गावती ने स्वयं को एक क्षेत्रीय शासक से आगे बढ़ाकर राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में स्थापित किया. आज, चाहे उन्हें लोककथाओं, स्मारकों या मध्य भारत की संस्कृति में याद किया जाए, वे इस सत्य की जीवंत मिसाल हैं कि नेतृत्व किसी एक लिंग की सीमाओं में नहीं बँधता.

प्रतीक से नीति तक- भारत इस कर्तव?य का निर्वहन करता है- आधुनिक भारत में महिलाओं के कल्याण और सशक्तिकरण की जो संरचना आज दिखाई देती है-जिसे महिला एवं बाल विकास मंत्रालय और संबद्ध विभागों द्वारा आगे बढ़ाया जा रहा है वह उसी कर्तव्य भावना और सार्वजनिक उत्तरदायित्व से प्रेरित है, जिसका उदाहरण रानी दुर्गावती ने अपने जीवन में प्रस्तुत किया था. जिस प्रकार रानी ने अपने समय में राज्य और प्रजा की रक्षा का दायित्व निभाया, उसी प्रकार आज की सरकार विभिन्न मोर्चों पर महिलाओं के अधिकारों, अवसरों और समान भागीदारी की रक्षा और विस्तार के लिए प्रतिबद्ध है.

शिक्षा और सामाजिक समरूपता- लड़कियों की शिक्षा में सुधार और लैंगिक अंतर को कम करने के उद्देश्य से लागू किए गए कार्यक्रम आज समाज की नींव को मजबूत कर रहे हैं.

आर्थिक सशक्तिकरण और उद्यमिता- कौशल विकास पहलों से लेकर ऋण और बाजार तक पहुँच प्रदान करने वाली योजनाएँ महिलाओं को उद्योग और व्यवसाय के क्षेत्र में नेतृत्व की भूमिका निभाने में सक्षम बना रही हैं. ये प्रयास आधुनिक शासन और निर्णय-निर्माण में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित कर रहे हैं.

सुरक्षा और कानूनी संरक्षण- वन स्टॉप सेंटर और विभिन्न हेल्पलाइन सेवाएँ महिलाओं की सुरक्षा, आत्मनिर्भरता और नागरिक भागीदारी सुनिश्चित करने में अहम भूमिका निभा रही हैं. इन पहलों ने यह सिद्ध किया है कि भय या असुरक्षा किसी महिला की प्रगति और आवाज़ को सीमित नहीं कर सकती.

स्वास्थ्य और मातृ देखभाल- मातृ स्वास्थ्य और पोषण से जुड़ी योजनाएँ केवल स्वास्थ्य सेवा तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे महिलाओं के समग्र कल्याण का प्रतीक हैं. ये प्रयास महिलाओं को स्वस्थ, आत्मविश्वासी और नेतृत्वकारी भूमिका निभाने के लिए सशक्त करते हैं.

जमीनी स्तर पर शासन और प्रतिनिधित्व- पंचायती राज संस्थाओं और शहरी स्थानीय निकायों में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने की पहलें लोकतांत्रिक शासन को और समावेशी बना रही हैं. यह उसी राजनीतिक दूरदर्शिता की झलक है, जो रानी दुर्गावती ने अपने राज्य के संचालन में प्रदर्शित की थी.

जीवन और उपलब्धियों में मापी गई प्रगति- पिछले कुछ दशक उल्लेखनीय प्रगति के साक्षी रहे हैं- महिला साक्षरता और कार्यबल में भागीदारी में वृद्धि, निर्वाचित पदों पर महिलाओं की बढ़ती उपस्थिति, उद्यमिता में तेजी से उभार, सुरक्षा एवं समान अवसरों के प्रति समाज की बढ़ती संवेदनशीलता ने भारत को एक नई दिशा दी है. ये बदलाव केवल आँकड़े भर नहीं हैं; ये उसी सिद्धांत की आधुनिक अभिव्यक्तियाँ हैं जो रानी दुर्गावती के जीवन ने सिखाया था कि जब महिलाएँ हर परिस्थिति के लिए सुसज्जित और सशक्त होती हैं, तो वे समाज को नया आकार देती हैं.

सरसंघचालक गोलवलकर ने प्रवासी हिंदुओं में आरएसएस की रुचि को दार्शनिक संदर्भ बताया

संघ कार्य का विदेशों में विस्तार

प्रो. विवेकानंद तिवारी
अध्यक्ष, आम्बेडकर पीठ
एचपीयू, शिमला

प्रवासी भारतीय समुदाय में आरएसएस की रुचि अखिल हिंदू एकीकरण के उसके सर्वोपरि लक्ष्य में निहित है. पहली विदेशी शाखाएँ 1947 में केन्या और म्यांमार में भारत से आए प्रवासी स्वयंसेवकों द्वारा शुरू की गईं, जो संगठन के विदेशों में और अधिक प्रसार के उत्प्रेरक भी थे. 1953 की शुरुआत में, तत्कालीन सरसंघचालक गोलवलकर ने राय प्रचारकों को दिए एक व्याख्यान में, प्रवासी हिंदुओं में आरएसएस की रुचि को एक दार्शनिक संदर्भ में प्रस्तुत किया, और कहा कि आरएसएस का एक विश्व मिशन है जो विश्व को एक परिवार मानने की हिंदू धारणा का प्रचार करता है. बेनेडिक्ट एंडरसन के शब्दों में कहें तो, इस दूरस्थ राष्ट्रवाद का उद्देश्य एक एकीकृत हिंदू समुदाय को देश में इस कार्य में सहयोग के लिए संगठित करना है, जिसका मुख्य उद्देश्य भारत और अन्य जगहों पर संघ परिवार द्वारा संचालित अनेक सेवा परियोजनाओं के लिए वित्तीय और स्वयंसेवी सहायता प्रदान करना है.

इन कारकों में शामिल हैं- आरएसएस का राष्ट्रवादी संदेश; पुरानी यादें और घर की याद; भारत में रह रहे परिवार के सदस्यों के साथ जुड़ाव; और, कई लोगों के लिए, भारतीय समुदाय के अन्य सदस्यों के साथ सामाजिक मेलजोल का औचित्य - इस प्रकार राष्ट्रवादी गतिविधियों में योगदान के माध्यम से अपनी सामाजिक स्थिति को बढ़ाने का अवसर प्रदान करना. अपने देश की मदद के ये प्रयास कई रूप ले सकते हैं, जैसे कि विदेशी योगदानकर्ताओं द्वारा प्राकृतिक आपदाओं के पीड़ितों को दी गई पर्याप्त सहायता- 1978 का आंध्र प्रदेश चक्रवात, जनवरी 2001 में गुजरात में आया भूकंप, दिसंबर 2004 में भारत के दक्षिण-पूर्वी तट पर आई सुनामी, और 2015 में हिमालय की तलहटी में आई बाढ़, ये कुछ उदाहरण हैं.

प्यू रिसर्च सेंटर के 2014 के अमेरिका में धर्म संबंधी अध्ययन के अनुसार, हिंदू कुल जनसंख्या का केवल .07 प्रतिशत हैं; हालांकि, वे शिक्षा के मामले में देश के अग्रणी जातीय समूह भी हैं - 77 प्रतिशत भारतीय अमेरिकी वयस्कों के पास कॉलेज या स्नातकोत्तर डिग्री है - और आय - 70 प्रतिशत प्रति व्यक्ति 50,000 डॉलर या उससे अधिक कमाते हैं. अमेरिकी हिंदू समुदाय अपेक्षाकृत धार्मिक है, और सर्वेक्षण में शामिल 79 प्रतिशत लोगों ने बताया कि धर्म उनके जीवन में बहुत महत्वपूर्ण या कुछ हद तक महत्वपूर्ण है.

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ विदेशों में हिंदू स्वयंसेवक संघ के रूप में कार्य करता है. ये संगठन 40 देशों में पंजीकृत है. तीन और देशों में भी इसकी शाखाएं हैं, हालांकि ये वहां पंजीकृत नहीं है. उल्लेखनीय है कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ हिंदुस्तान में पंजीकृत संगठन नहीं है. रोचक बात है कि एचएसएस की पहली शाखा पानी के जहाज पर लगी थे और वो भी भारत की आजादी से चंद महीने पहले. जनवरी, 1947 में भारतीयों को लेकर अफ्रीका जा रहे एक जहाज पर पंजाब के संघ के एक सदस्य की इछा अपने संगठन की प्रार्थना गाने की हुई. उसने संघ की प्रार्थना, नमस्ते सदावत्सले मातृभूमे गाना शुरु किया तो उसने देखा की कई और लोग भी उसके साथ गा रहे हैं. संघ के उस कार्यकर्ता का नाम जगदीश शारदा शास?त्री था. जहाज पर लगी उस शाखा का संघ की भारत के बाहर लगी पहली शाखा माना गया. 1946 में दो स्वयंसेवक मानेकभाई रुगानी और जगदीश चंद्र शारदा मुंबई से मोंबासा (कीनिया) जा रहा थे. वे दोनों एक दूसरे को जानते नहीं थे. लेकिन उन्हीं में से एक ने दूसरे का दाहिने हाथ से संघ की विशेष शैली में नमस्कार करते देखा और उसके बाद दोनों ने एक दूसरे से परिचय किया. उन्होंने उसी जहाज पर पहली शाखा लगाई. उसी वर्ष भारत स्वयंसेवक संघ का कीनिया में गठन किया गया और बाद में उसे हिंदू स्वयंसेवक संघ नाम दिया गया. विदेशी धरती पर संघ की पहली शाखा मोंबासा में लगी थी. संघ की इसी इकाई सदस्यों ने तंजानिया, उगांडा, मॉरिशस और अफ्रीका के अन्य हिस्सों में अपना प्रचार-प्रसार किया. ब्रिटेन में एचएसएच की शाखा 1966 में खुली. संगठन ने 1989 में अमेरिका की धरती पर पैर रखा. फिलहाल विदेशों में एचएसएस की लगभग 1,000 शाखाए हर हफ्ते लगती हैं. एचएसएस की हर देश की इकाई का अपना प्रमुख होता है. अंतरराष्ट्रीय स्तर पर संगठन का एक विश्व संयोजक होता है और तीन संयुक्त संयोजक.

न्यूयॉर्क के सौमित्र गोखले फिलहाल एचएसएस के विश्व संयोजक है, जबकि रवि कुमार(ऑस्ट्रेलिया), डॉ रामवैद्य (लंदन), डॉ सदानंद सप्रे (भोपाल) संयुक्त संयोजक हैं.

अंतरराष्ट्रीय भूमिका की दृष्टि

अब रही अंतरराष्ट्रीय भूमिका की बात— तो मैंने पहले भी कहा है कि विश्व के सभी देश अपने-अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर, अपनी विशिष्टता और अपनी सीमाएँ बनाए रखते हुए, सहयोगी भूमिका में आएं. केवल स्वार्थ साधन तक सीमित न रहें. इसके लिए निरंतर आपसी संपर्क आवश्यक है. यह कार्य सरकार का नहीं है, बल्कि व्यक्ति-से-व्यक्ति संपर्क का है. इसी दृष्टि से हम आउटरीच बढ़ा रहे हैं. विशेष रूप से पड़ोसी देशों को पहले जोड़ने का प्रयास हो रहा है. यह मैंने कल भी स्पष्ट किया था.

व्यंग्य

वफादारी का सिला.....

रवि उपाध्याय

सुप्रीम कोर्ट ने स्ट्रीट डॉग्स आवारा कुत्तों को लेकर जो फैसला दिया गया उससे डॉग लवर्स में तो हलचल मची ही दुनिया में सबसे वफादार कौम के लिए मशहूर डॉग कम्युनिटि में भी निराशा छा गई. सब श्वान यही सोच रहे थे कि पौराणिक काल से चली आ रही हमारी वफादारी का क्या यही पुरस्कार है? क्या यही न्याय के मंदिर का न्याय है ?

पिछले दिनों कोर्ट के इसी फैसले से त्रस्त शहर भर के स्ट्रीट डॉग्स ने एक विशाल आपातकालीन बैठक का आयोजन किया. देशी कुत्तों की उक्त बैठक में शेरा नाम के श्वान ने दुखी मन से कहा कि साथियों, सबसे दुर्भाग्य जनक बात तो यह है कि सुप्रीम कोर्ट द्वारा हम वफादारों के खिलाफ यह फरमान उस समय सुनाया गया जब सारा देश,आजादी की 79 वीं वर्षगांठ मनाने की तैयारियां कर रहा था. तब सुप्रीम कोर्ट ने चंद सिरफिरे हिंसक कुत्तों द्वारा कुछ लोगों को काटे जाने पर यह मामला सु-मोटो यानि स्वेच्छा से सुनवाई में ले लिया और टॉप प्रियॉरिटी पर लेकर यह फरमान सुना डाला. अब सवाल यह है कि क्या किसी एक श्वान के अपराध की सजा उसके समूचे समाज को दी जा सकती है? यह कौन सा न्याय है ? जहाँ जिंदा इंसानों के लाखों केस की फाइलें दशकों से कोर्ट के रिकॉर्ड रूम में धूल फांकती हुई साल दर साल दिन दूनी चार गुना की स्पीड से नए-नए रिकॉर्ड बना रहीं हैं. ऐसे में मी लार्ड आपका यह आदेश क्या यह उन आदमियों और हमारे साथ न्याय है ?

शेरू के बाद बोलते हुए भूरिया नामक देशी श्वान ने कहा भाइयों यह अन्याय है यह सरासर ना इंसाफी है . एक तरफ तो सरकारें स्वतंत्रता दिवस,15 अगस्त पर जेलों में सजा काट रहे कैदियों की सजा माफ कर के जेलों से छोड़ती है. वहीं दूसरी तरफ वही अदालतें हमें सड़कों से हटाने का आदेश दे रहीं हैं. इस आदेश के बहाने की आड़ में तो जो हमसे नफरत करते हैं वे हमें जहर देकर या पत्थर मार-मार कर जिंदा ही मार डालेंगे. शेरू ने कहा साथियों ये तो हमारे खिलाफ एक तरह से तालिबानी सज़ा होगी. इसके खिलाफ हम सब को एक होना होगा. वैसे भी एक तबका ऐसा भी है जो हम से बेइंतहा नफरत करता है.

मोती ने कहा कि दोस्तों ये समझ लीजिए कि हम सब इस देश के मूल निवासी हैं और अब तक हम लोगों द्वारा फेंके गए टुकड़ों पर पलते हैं.भाइयों हम महाभारत काल में भी थे और आज भी हैं. विदेशी नस्ल के स्वान हम देशी मूल निवासी स्वानों पर भारी हैं. देश का एक तबका विदेशियों की नस्ल पर फिदा है. कालू नामक स्वान ने कहा भाइयों हमने यह अपने ही देश में देखा है कि प्राचीन समय में हमने विदेशियों के प्रति जो सहानुभूति बरती उसी का नतीजा रहा है कि हम 800 वर्षों तक उनके गुलाम रहे हैं. सम्मेलन में बोलते हुए एक अन्य स्वान भूरिया ने एकलव्य के बाणों को अपने मुंह पर झेल कर उसे अर्जुन की भांति एक श्रेष्ठ तीरंदाज बनाने में अपना खून बहाया है. हम सदियों से खेत, खलिहान बस्तियों और घरों की रखवाली करते चले आ रहे हैं. बड़ी बड़ी हवेलियों और सरकारी बंगलों में रहने वाले हमारी पीड़ा क्या और क्यों जानेंगे, जो हजारों रुपए खर्च कर खूंखार विदेशी कुत्तों को पालते पोषते हैं .और अंत में वही विदेशी नस्लों के डॉग अपने मालिकों पर ही हमला कर उनकी जान ले लेते हैं द्य कम से कम हम तो इतने नकम हराम नहीं हैं जो अपने मालिकों पर हमला करते हों द्य हाँ जब हम को बिना कारण परेशान किया जाता हैं तब अपनी आत्म रक्षा में जरूर ऐसी घटना हो जाना सामान्य बात है . आत्म रक्षा का जितना अधिकार आदमी को है उतना अधिकार तो हमको भी है.

टायगर नामक श्वान ने कहा सड़कों से हटाने के कई अर्थ निकलते हैं. इस पर कोर्ट मौन रहा कि सड़कों से हटा कर कहाँ भेजा जाए? बाद में कोर्ट ने लोकल बॉडीज़ को कुत्तों को एंटी रेबीज़ वैक्सीन लगाने और शेल्टर होम बनाने के लिए निर्देश दे कर हम वफ़ादारों पर बड़ी मेहरबानी की है. लेकिन हमारा एक सवाल भी है कि लोकल बॉडीज सड़कों पर डेरा जमाए बैठीं गाय भैंसों को तो हटा नहीं पा रही हैं . वहीं दूसरी तरफ नेता कांजी हाउस में पशुओं का चारा खुद ही उड़ा रहे हैं और गाय सड़कों पर कूड़ा कचरा खाती फिर रहीं हैं. ऐसे में लोकल बॉडीज़ में मौजूद जन प्रतिनिधि पहले अपना पेट भरेंगी या हमारा द्य यह वह देश है जहाँ पशुओं चारा नेता खा रहें हैं, गौशालाओं में गाय भूखों मर रहीं है उनके संचालक अमीर बनते जा रहे हैं द्य इनको वफ़ादारी सीखना है तो हम से सीखें द्य हम बरसात हो या ठंड या गर्मी अपने मालिक के दरवाजे पर पड़े रह कर उसके और उसके परिवार के प्रति वफादार होते हैं .

इसी समस्या पर विचार करने के लिए सिटी से कहीं दूर एक बड़े से खाली मैदान में बड़ी संख्या में देशी कुत्ते मीटिंग के लिए एकत्रित हुए. इस इमरजेंसी बैठक में संघों शक्ति कल युगे% के मंत्र को ध्यान में रखते हुए शेरू नामक कुत्ते को अध्यक्ष चुन लिया गया. इस पर शेरू ने वहां मौजूद कुत्तों का अभिवादन करते हुए कहा कि उम्मीद है कि आप सभी मुझे अध्यक्ष बनाए जाने पर सहमत होंगे. ■

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12045 - डॉ. सागर खादीवाला

1	2		3			4	
	5	6			7		
8		9	10	11			12
13	14		15			16	
	17	18			19		
20		21	22	23			24
25	26		27			28	
29					30		

ऊपर से नीचे
2. जिसमें पूरे के अतिरिक्त चौथाई और जुड़ा हो 4. वाष्प 6. सत्य 7. आच्छादित करना 8. वह सीधी रेखा जो किसी वृत अथवा गोल क्षेत्र के बीच में होती हुई गई हो 10. शहद 11. कण, कान का समास में व्यवहृत संक्षिप्त रूप 12. खालिस, विशुद्ध, व्यवहार में सच्चा 14. चिराग, दीया 16. दौलत, द्रव्य, संपत्ति 18. तोता, सुग्गा 19. विदित, जाना हुआ 20. शरीर पोंछने का विशेष प्रकार का अंगोछा 22. जूट 23. कोई बात बार-बार दोहराना 24. याद न रखना या याद न रहना 26. पत्र, चिट्ठी (उर्दू) 28. सूर्य प्रकाश, सुगंध के लिए गंध द्रव्यों को जलाकर उठा हुआ धुआं

बाएं से दाएं
1. राजा उग्रसेन का पुत्र जिसका वध कृष्ण ने किया था 3. बाण नदी का किनारा, तट 4. सावन के बाद और कुंवार के पहले का महीना, भाद्रपद 5. निवास, रहना 7. मुद्रण, किसी उभरे हुए या खुदे हुए ठप्पे का चिन्ह 9. जगमगाना, प्रकाशित होना 13. शताब्दी, सैकड़ा (उर्दू) 15. लगन, गाने की तर्ज 16. पृथ्वी 17. मवेशी, चौपाया 19. बोध, जानना 21. व्यायाम, बहुलता (उर्दू) 25. लिखने वाला, लेखक 27. अभिनेता, एक जाति 28. रज, गर्द 29. कष्ट, पीड़ा 30. बोना, लगाना

Solution 12044

प	क्षा	हा	र		अ	थ	क
दा	र		ज	वा	न		बा
र्थ		भु	त		ल	क	ड़ी
	स	मा	प	न		स	
स	र	प	ट		प्र	क	ट
ह	ल	क		ब	च	ना	
	रे		त	र	ल		ख्वा
रू	खा	र	ना		न	सी	ब

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में साझेदारी में विवाद एवं व्यवसाय में हानि होगी, वाणी में कठोरता तथा क्रोध में वृद्धि होगी, व्यय और संतान की चिन्ता से मन विचलित रहेगा, वर्ष के मध्य में राज्य सम्मान मिलेगा, सामाजिक प्रभाव बना रहेगा, शासन सत्ता का सुख प्राप्त होगा, अध्ययन में मन लगेगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को राज्य सम्मान मिलेगा, प्रभाव में वृद्धि होगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को साझेदारी में विवाद एवं व्यवसाय में नुकसान होगा, कर्क राशि के व्यक्तियों को व्यय और संतान पक्ष की चिन्ता रहेगी, मन विचलित रहेगा, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को शासन सत्ता का सुख मिलेगा, अध्ययन में रूचि रहेगी, क्रोध की अधिकता रहेगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को पारिवारिक सुख और सौहार्द्र बना रहेगा, सिंह राशि के व्यक्तियों को परिश्रम अधिक करना होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्वस्थ्य, गौरवर्ण का लंबे कद का दुबला पतला एवं बुद्धिमान और जिद्दी-मनमौजी होगा, किसी की नहीं सुनेगा, मित्रों की संख्या अधिक होगी, इंजीनियरिंग में तरक्की करेगा, माता पिता का भक्त होगा.

मेष- घरेलू आयोजन में भाग लेंगे, मातृपक्ष से विशिष्टजनों का समाचार मिलेगा, मतभेदों से बचने का प्रयास करें, मार्गदर्शन मिलेगा.

वृषभ- मित्रों से किया गया वायदा निभाने में मुश्किल होगी, व्यापार में सफ्लता मिलेगी, महत्वपूर्ण समाचारों की योजना बनेगी, जरूरी विचार विमर्श होगा.

मिथुन- रूखे व्यवहार से परिचितों को नाराज कर सकते हैं,अतिथि आगमन होगा, शत्रुओं पर विजय मिलेगी, मान सम्मान की प्राप्ति होगी. नवीन योजना बनेगी.

कर्क- नाराज चल रहे लोगों को मनाना मुश्किल होगा, दिखावे के कारण कर्ज हो सकता है, इष्ट मित्रों एवं परिजनों के सहयोग से कुछ कार्यो में सफ्लता मिलेगी.

सिंह- विपरीत माहौल में खुद के लिये अनुकला बना लेंगे, संतान संबंधी कार्यो में व्यस्तता रहेगी, नवीन कार्यो के प्रति मन का झुकाव रहेगा.

कन्या- प्रापर्टी संबंधी मामले सुलझने की उम्मीद है, अधिनस्थ लोगों का सहयोग मिलेगा, बेरोजगारों को प्रयास करने पर रोजगार मिलेगा.

तुला- कारोबारी विस्तार की संभावना, आर्थिक कार्यो में सफ्लता मिलेगी, कुटुम्बियों का सहयोग प्राप्त होगा, मानसिक प्रसन्नता रहेगी.

वृश्चिक- सामाजिक कार्यो में शामिल होकर मन को खुशी मिलेगी, भावनात्मक संबंध बढ़ेंगे, अधिक वाकपटुता से काम बिगड़ सकता है, वार्तालाप संयमित रखें.

धनु- कार्यक्षेत्र में सहयोग लाभदायी रहेगा, यात्रा मे उठाईगीरों से सावधान रहें, दूर गये मित्र के संबंध में समाचार प्राप्त हो सकता है.

मकर- अधिकारियों का मेलजोल लाभदायक रहेगा, इच्छित कार्यो की रूपरेखा बनेगी, सफ्लता प्राप्त होगी, मन में हर्ष और उत्साह बना रहेगा.

कुम्भ- मन की बात मित्रों से कह दें, तनाव कम होगा, पारिवारिक यात्रा हो सकती है, नौकरी में व्यस्तता रहेगी, तनाव की स्थिति से बचें.

मीन- नये कार्य के लिये जरूरी धन की व्यवस्था कर लेंगे, मानसिक प्रसन्नता होगी, व्यापार में सफ्लता प्राप्त होगी, परेशनियों का निवारण होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

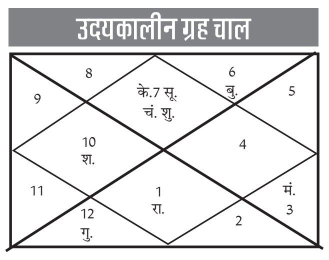

पंचांग

रा.मि. 18 संवत् 2082 कार्तिक कृष्ण चतुर्थी भृगुवासरे रात 12/24, कृतिका नक्षत्रे रात 10/50, सिद्धि योगे रात 11/38, वव करणे सू.उ. 6/12, सू.अ. 5/48, चन्द्रचार वृषभ,शु.रा. 2, 4, 5, 8, 9, 12 अ.रा. 3, 6, 7, 10, 11, 1 शुभांक- 4 ,6, 0.

व्यापार भविष्य

कार्तिक कृष्ण चतुर्थी को कृतिका नक्षत्र के प्रभाव से गुड़-खांड, शक्कर, नारियल, छुहारा, बादाम, कन्या के भाव में तेजी होगी, अलसी, अरंडी, सींगदाना, में नरमी रहेगी, जूट, पाट, बारदाना, हैसियन, में समता रहेगी, भाग्यांक 3787 है.

SUDOKU 7177

				6	8	5		
	1						2	
		2						8
			4					9
6				5				1
2					3			
5						3		
	8						6	
		4	9	1				

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सु-डोकू 7176

2	4	6	7	9	3	5	8	1
3	1	5	2	8	6	4	7	9
7	8	6	1	5	4	2	3	6
6	5	7	9	3	8	1	4	2
9	3	1	4	7	2	8	6	5
4	2	8	6	1	5	7	9	3
1	9	2	3	4	7	6	5	8
5	7	3	8	6	1	9	2	4
8	6	4	5	2	9	3	1	7